H.S.S - Hindi Kavitharachana

"सागर में लहरें क्यों उमड़ रही हैं।"

39 | RR-H.S.S

पता नहीं।

पता नहीं क्यों, जब मैं ने देखा,
तब लहरें उमड़ रही थी सागर में।
किसी नटखट बच्चे की तरह
वह अपनी अपनी आप कूद रही थी।
लहरें उमड़ रही थी।

लग रहा है वह पूरी धरती को
मज़ा लेने की कोशिश में है।
लग रहा है वह किसी प्रेमिका के सन्देश
उसकी जान की ओर पहूँचाने की कोशिश में है।
लग रहा है वह अपनी खुशी को
दिखाने केलिए उमड़ रही है।
लग रहा है वह अपनी दुःख को
न दिखाने केलिए उमड़ रही है।
क्या वह अपनी पुरानी सपनों को
हकीकत बनाने केलिए दौड़ रहा है?

पता नहीं! इन लहरें भी न,
होता है इनकी बातें बहुत ~~विचित्र~~ अजीब।

बाहर से देखे तो बहुत प्रसन्न है।
पीली रेत को सहलाकर, आगे-पीछे जाकर,
नाचकर, वह सबको खुश रखती है।
पर अंदर से देखे तो आँधी है वहाँ।
आसान नहीं है वहाँ तक पहुँचना।
अगर पहुँच गए तो, दिख सकते हैं हम,
उसकी मन की अशांती।
फिर भी अंदर रोकर बाहर हँसती है।
बिलकुल हमारी तरह।

लहरें कोई और नहीं है।
बल्कि, वह हम ही हैं, हमारे प्रतीक ही है।
कभी ऊपर, कभी नीचे,
कभी हँसकर, कभी रोकर।
इतना अजीब कि, हम सोच भी नहीं सकते।

अब भी, यहाँ आने से पहले भी,
मैं ने देखा।
तब भी लहरें उमड़ रही थी।
पर किस बात के लिए?
पता नहीं!

x x x x x